17 फरवरी 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 36, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

## 11वाँ वार्षिक महोत्सव सानन्द संपन्न

**मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) :** यहाँ मंगलायतन की स्थापना का 11वाँ वार्षिक महोत्सव 31 जनवरी से 6 फरवरी तक सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित ज्ञानचन्दजी सोनागिर, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, डॉ. जयन्तीलालजी जैन मंगलायतन विश्वविद्यालय, डॉ. योगेशजी जैन अलीगंज, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन मंगलायतन, पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन, ब्र. अमितजी जैन विदिशा आदि विद्वानों एवं विदुषी ब्र. कल्पना बेन सागर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। साथ ही मंगलार्थी छात्रों द्वारा भी प्रवचन हुये। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में नवलब्धि मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती सुधा जैन की पुण्यस्मृति में श्री राजकुमार जैन परिवार सहारनपुर द्वारा किया गया। विशिष्ट सहयोगी के रूप में श्रीमती चेतना राजेन्द्रबाबू जैन कानपुर व श्री जैनबहादुर जैन कानपुर का विशेष सहयोग रहा। आमंत्रणकर्त्ता के रूप में श्री सीमन्धर जिनालय फालका बाजार ग्वालियर का सहयोग रहा।

इस प्रसंग पर पं. कैलाशचंदजी जैन द्वारा लिखित जैन तत्त्वदर्शन भाग-1 तथा आचार्य शिवकोटि द्वारा रचित भगवती आराधना का विमोचन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित अशोकजी लुहाडिया, पण्डित सुधीरजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री ने किया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजयजी जैन मंगलायतन एवं मंगलार्थी छात्रों द्वारा संपन्न हुये।

## 81 वर्ष की उम्र में पीएच.डी.

**सूरत (गुज.) निवासी श्री धनकुमारजी जैन (गोधा)** को 81 वर्ष की उम्र में **'टोडरमल कृत अर्थसंदृष्टि अधिकार में निहित कर्म प्रकृति मोह का गणितीय विश्लेषण'** विषय पर शोधकार्य हेतु 'द ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फॉर कॉम्प्लीमेन्ट्री मेडिसिन्स' मुम्बई द्वारा पीएच.डी. की उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना यह शोध कार्य डॉ. अनुपम जैन इन्दौर एवं डॉ. मनमथ पाटनी के निर्देशन में पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध का आधार पण्डित टोडरमलजी की सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका का अर्थसंदृष्टि अधिकार है। श्री धनकुमारजी जैन स्वयं एक गणित के अच्छे विशेषज्ञ विद्वान हैं और आपने प्रस्तुत शोध आलेख में गणित की अनसुलझी जटिल गुत्थियों को आधुनिक गणित में रूपान्तरित करके विषय को अत्यन्त स्पष्ट किया है। आपकी इस उपलब्धि हेतु हार्दिक बधाई !

इस उपलक्ष्य में आपकी ओर से टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 3000/- एवं जैनपथप्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को 2,222/- प्राप्त हुये।

## भगवान आदिनाथ निर्वाणोत्सव एवं कुन्दकुन्दाचार्य जयन्ती संपन्न

**जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 29 जनवरी को आदिनाथ भगवान का निर्वाण महोत्सव मनाया गया, जिसके अन्तर्गत टोडरमल महाविद्यालय के सभी विद्यार्थियों एवं अनेक श्रद्धालुओं द्वारा कैलाश पर्वत पर विराजमान आदिनाथ भगवान की पूजा व निर्वाण फल चढाया गया। प्रातः पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने प्रवचनसार की गाथा 80 के आधार से अरहंत बनने की विधि पर प्रकाश डाला एवं रात्रि में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने दर्शनपाहुड के आधार पर मुक्तिमार्ग की चर्चा की।

दिनांक 4 फरवरी (बसंत पंचमी) को आचार्य कुन्दकुन्द की जन्म जयन्ती मनाई गई। प्राचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के उद्बोधन के पश्चात् आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित पंचपरमागम की जिनवाणी शोभायात्रा स्मारक परिसर में बहुत धूमधाम से निकाली गई। पंचपरमागम को पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान करने के उपरांत कुन्दकुन्द आचार्य की विशेष पूजन की गई।

सभी कार्यक्रम पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में संपन्न हुये।

## कुन्दकुन्दाचार्य पर विचार गोष्ठी

**जयपुर (राज.) :** यहाँ बापूनगर स्थित पार्श्वनाथ चैत्यालय में दिनांक 4 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द के जन्म दिवस बसंत पंचमी के दिन दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ जयपुर के तत्त्वावधान में **'आचार्य कुन्दकुन्द का वैशिष्ट्य'** विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सनतकुमारजी जैन एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन एवं साहित्य से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला।

समारोह की अध्यक्षता श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी ने की।

कार्यक्रम का संचालन श्री योगेशकुमारजी टोडरका ने किया।

## ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

**राजकोट (गुज.) :** यहाँ दिनांक 11 से 20 जनवरी 2014 तक ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा दोनों समय गुणस्थान विषय पर कक्षायें ली गईं। राजकोट में प्रथम बार आयोजित करणानुयोग की कक्षाओं में लगभग 100-150 साधर्मियों ने लाभ लिया।

# द्वितीय वार्षिकोत्सव की पत्रिका

# द्वितीय वार्षिकोत्सव की पत्रिका

सम्पादकीय -

# बहू हो तो ऐसी : ज्योत्स्ना जैसी

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

ज्योत्स्ना के जीवन पर उसकी माँ की छाप बहुत अधिक है। इसकारण धार्मिक क्षेत्र में वह अधिक सक्रिय रहती है। अपनी मीठी बोली, मधुर व्यवहार और धर्मात्माओं के प्रति निस्वार्थ प्रेम होने से वह धार्मिक क्षेत्र में जनप्रिय भी हो गई।

गणतंत्र अपने रिजर्व नेचर के कारण भले ही ज्योत्स्ना के बराबर जनप्रिय नहीं हो पाया; परन्तु उसमें भी कुछ ऐसी विशेषतायें हैं, जिनका लोग बराबर लोहा मानते हैं। यदि उसके क्रोधी स्वभाव और रिजर्व नेचर को गौण करके देखें तो वह भी बहुत अच्छा इन्सान है। ज्योत्स्ना के सम्पर्क से अब उसका क्रोध तो कम हुआ ही है, तत्त्वरुचि हो जाने से अब वह धार्मिक और नैतिक विकास के कामों में भी सक्रिय हो रहा है।

एक पड़ोसिन अम्मा को जिज्ञासा जगी, उसे यह जानने की उत्सुकता हुई कि देखें तो सही - ज्योत्स्ना ने सासू माँ पर ऐसा क्या जादू कर दिया है कि इतनी तेज-तर्रार सास पानी-पानी हो गई ? आखिर ज्वालाबाई शान्तिबाई कैसे बन गई ? और दस वर्ष से बहू के साथ उसकी एक ही चौके में कैसे निभ रही है ?'' यह साधारण बात नहीं है। यद्यपि पतियों को पलट लेना बहुत कठिन नहीं है; किन्तु क्रोधी पति को पलट लेना आसान भी नहीं है। साथ ही सास-श्वसुर को काबू में करना तो लोहे के चने चबाने जैसा है। इसलिए ज्योत्स्ना तारीफ के काबिल तो है ही।

एक दिन उस पड़ोसिन अम्मा ने प्यार से ज्योत्स्ना के सिर पर हाथ फेरते हुए उससे पूछा - ''बेटी ! यदि बुरा न माने तो एक बात पूछूँ ?''

ज्योत्स्ना ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा - ''अम्मा ! कैसी बातें करती हो ? इसमें बुरा मानने की क्या बात हैं। तुम ऐसी कौन-सी बुरी बात कहने जा रही हो, जिसका बुरा माना जाय ? तुम कोई ज्ञान की बात पूछ कर अपनी जिज्ञासा ही तो शान्त कर रही हो। यदि बुरी लगनेवाली बात कहोगी तो उसका भी मेरे पास उपाय है।'

पड़ोसिन अम्मा ने पूछा - ''वह कौन-सा उपाय है जिससे बुरी बात का भी तू बुरा नहीं मानती ?''

ज्योत्स्ना ने कहा - ''अरे ! अम्मा ! जो भली बात होती है, मैं उसे ही अपनाती हूँ, जो बात मुझे ठीक नहीं लगती, मैं उस पर ध्यान नहीं देती। मैं सोच लेती हूँ कि जो बात कान में पड़ते ही दिमाग खराब करती है, उसे अपनाकर क्या करूँगी ? और अपने दो कान किसलिए हैं ? इसीलिए न कि बुरी बात को इस कान से सुनो और उस कान से निकाल दो। उसे गले से निगलो ही मत। निगलने से ही तो पेट में दर्द की संभावना बनती है। इसलिए मैं तो हमेशा यही करती हूँ कि बुरी बात इस कान से सुनी और उस कान से निकाल दी। इसी कारण कुछ भी/कैसी भी बातें सुनने से मेरे पेट में दर्द नहीं होता।''

ज्योति ने आगे कहा - ''जब मैं ऐसा करती हूँ तो दूसरी बार बुरी बात कहने की कोई सोचता ही नहीं है और हाँ, मैं ऐसा करके उससे अपना बोलचाल एवं व्यवहार पूर्ववत् ही चालू रखती हूँ। अपने व्यवहार में फर्क नहीं लाती।''

इसप्रकार ज्योत्स्ना ने अपनी नीति बड़े प्यार से पड़ोसिन अम्मा को समझा दी।

अम्मा ने कहा - ''यह तो अति उत्तम है। यह प्रयोग मैं भी करूँगी, परन्तु मैं तो यह सोच-सोच कर हैरान थी कि जिसका पति ऐसा क्रोधी हो जो बात-बात पर इतना आग-बबूला हो जाता हो कि जो कोई भी उसे छुए तो वह जल ही जायेगा। जिसकी सास इतनी तेज-तर्रार हो, वह बहू कितनी भी सुशील व सज्जन क्यों न हो, कैसे सहती होगी इनके ऐसे अत्याचार ? सहनशीलता की भी तो कोई हद होती है। मैं यह सब सोचकर कौतूहलवश यह जानने को यहाँ आई थी; पर यहाँ आकर देखा तो यहाँ तो सचमुच सब उलट-पलट ही हो गया। गजब हो गया ! बहू ! तूने ऐसा क्या जादू कर दिया ? इसकी विशेष जानकारी तो तेरे निकट सम्पर्क में रहने से ही मिल सकेगी; परन्तु यदि यह सफल नुस्खा मेरे हाथ लग जाय तो मैं तो इसे हर कीमत पर सारी दुनियाँ में फैला देना चाहती हूँ; क्योंकि दुनिया सास-बहुओं की कसमकस से परेशान है। फिर 'सास भी कभी बहू थी' जैसे टी. वी. सीरियलों की कोई जरुरत ही नहीं रहेगी। घर-घर की रोने-धोने की कहानियाँ भी विश्व के नक्शे से नदारद हो जायेंगी। इससे बढ़कर परोपकार का, पुण्य का अन्य कोई काम नहीं हो सकता। बहुएँ तो बेचारी दु:खी हैं ही, सासें भी कम परेशान नहीं हैं। मैं चाहती हूँ इसका कोई सरल-सा उपाय मिले। मुझे विश्वास है कि यह काम हम-तुम मिलकर कर सकते हैं। अत: तू मुझे वह महामंत्र बता, जिस महामंत्र से तूने अपनी सासू माँ का दिल जीता है, उसे ज्वालाबाई से शान्तिबाई बना दिया है और गणतंत्र जैसे ज्वालामुखी को हिमालय जैसा शीतल एवं गंगा जैसा कल-कल नाद करनेवाला मधुरभाषी बना दिया है। उस महामंत्र को मैं सारे विश्व में फैला कर सबके मनस्ताप को शान्त करूँगी - ऐसा मेरा दृढ़ संकल्प है। पैसे की मुझे परवाह नहीं है। इस काम के लिए मेरे पास पर्याप्त पैसा है; बल्कि मुझे तो पैसा खर्च करने की समस्या है कि कहाँ खर्च करूँ?

(क्रमश:)

# सिद्धभक्ति

15 छठवीं पूजन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

**(गतांक से आगे...)**

बालक जब माँ से चन्दा मामा की माँग करता है तो परेशान होकर माँ एक थाली में पानी भरकर रख देती है। उसमें पड़े चन्द्रमा के प्रतिबिंब को देखकर, उसे असली चन्द्रमा समझकर बालक उस पर झपट पड़ता है। पानी हिलने से जब चन्द्रमा गायब हो जाता है तो बालक रोने लगता है और फिर चन्द्रमा की माँग करने लगता है।

बालक की अबोधता संबंधी उक्त घटना की उपमा का उदाहरण देकर कवि कह रहा है कि हम भी उस बालक के समान ही हैं; आपकी भक्ति का प्रयास कर रहे हैं। हमारा यह कार्य उस बालक के समान ही है।

यदि वे स्थूल शब्द त्रस-स्थावर पर्याय को भी नहीं पकड़ सकते तो फिर हम आपके गुणों का वर्णन कैसे करते ? अभी तो हमने शेष चार परमेष्ठियों को आपमें शामिल करके, उनके गुणों को आपके ही गुण मान कर हम आपके गुणगान कर रहे हैं; क्योंकि वे भी तो निकट भविष्य के सिद्ध भगवान ही हैं।

भक्तामर भक्तिकाव्य में भी इसीप्रकार के भाव का पोषक एक छन्द प्रस्तुत किया गया है; जो इसप्रकार है -

( बसंततिलका )

**बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ**
**स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम्।**
**बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब-**
**मन्य: क इच्छति जन: सहसा ग्रहीतुम्।।३।।**

जिसप्रकार जल में पड़े हुए चन्द्रमा के प्रतिबिंब को सहसा ग्रहण करने की इच्छा बालक को छोड़कर अन्य कौन कर सकता है? तात्पर्य यह है कि कोई समझदार बुद्धिमान व्यक्ति तो ऐसा कर नहीं सकता।

उसीप्रकार हे विबुधार्चितपादपीठ ! इन्द्रों द्वारा पूजित हैं चरणकमल जिनके, ऐसे आदिनाथ भगवान् ! मैं बुद्धि के बिना ही निर्लज्ज होकर आपकी स्तुति करने को तैयार हो गया हूँ।

आचार्य मानतुंग कृत भक्तामर काव्य के इस छन्द का हिन्दी पद्यानुवाद पण्डित हेमराजजी ने इसप्रकार किया है -

( चौपाई )

**विबुधवंद्यपद मैं मतिहीन, हो निलज्ज थुति मनसा कीन।**
**जलप्रतिबिंब बुद्ध को गहै, शशि-मण्डल बालक ही चहै।।३।।**

जिसप्रकार पानी में पड़े चन्द्रमा के प्रतिबिंब को ग्रहण करने का भाव बालक ही करता है; कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं; उसीप्रकार हे विबुधवंद्य आदिनाथ भगवन् ! मतिहीन मैंने निर्लज्ज होकर आपकी स्तुति करने का मन बनाया है।

इसके आगे के सभी छन्द पद्धरि छन्द हैं। उनमें से आरंभिक छन्द इसप्रकार है -

( पद्धरि छन्द )

**जय पर-निमित व्यवहार त्याग, पायो निज शुद्धस्वरूप भाग।**
**जय जग पालन बिन जगत देव, जय दयाभाव बिन शांतिभेव।।३।।**

हे सिद्ध भगवन् ! आपने पर-निमित्त और व्यवहार को त्याग कर निज शुद्धस्वरूप को प्राप्त किया है; अत: आपकी जय हो, जय हो।

यद्यपि आपने जगत का पालन नहीं किया है, तथापि आप जगत के देव कहे जाते हैं। यद्यपि आप में दयाभाव नहीं है, तथापि आप शांतिस्वरूप हैं। अत: हे भगवन् ! आपकी जय हो, जय हो।

इस छन्द में जो यह कहा गया है कि पर-निमित्त और व्यवहार को त्याग कर ही अपने शुद्धस्वभाव को प्राप्त किया है; इसका तो स्पष्ट अर्थ यही है कि पर-निमित्त और व्यवहार के त्याग के बिना अपने शुद्धस्वरूप की प्राप्ति नहीं की जा सकती है; अत: जिन्हें अपने शुद्धस्वरूप रूप मुक्ति की प्राप्ति करनी है; वे लोग पर-निमित्त और व्यवहार का त्याग कर दें।

तात्पर्य यह है कि मुक्ति के मार्ग में इनका त्याग अनिवार्य है।

**देखो, पूजन में भी ऐसा लिखा है कि पर, निमित्त और व्यवहार का त्याग कर देना चाहिए।**

दूसरी बात यह है कि भले ही सिद्ध भगवान शान्तिस्वरूप हों, जगत के देव हों; पर वे जगत का पालन नहीं करते और उनमें दयाभाव नहीं होता; क्योंकि दयाभाव तो एक प्रकार का रागभाव ही है और वह चारित्रमोहनीय कर्म के उदय से होता है।

जो मोहकर्म की संतान हो, मोहभावरूप ही हो; वह वास्तविक धर्म या निश्चय धर्म कैसे हो सकता है ?

भले ही उसे व्यवहार से धर्म कहें, व्यवहार धर्म कहें; पर वह रागभावरूप होने से, शुभरागरूप होने से वास्तविक धर्म नहीं हो सकता।

**(क्रमश:)**

# हार्दिक बधाई

**(1)** श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **डॉ. अशोककुमारजी शास्त्री दिल्ली** को जैनधर्म के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान हेतु अहिंसा इन्टरनेशनल द्वारा दिनांक 12 जनवरी 2014 को अहिंसा इन्टरनेशनल जिनेन्द्र वर्णी जैनधर्म प्रचार-प्रसार पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

**(2)** इन्दौर (म.प्र.) निवासी श्री आनन्द कुमार नवीन कुमार पाटनी द्वारा गृह प्रवेश के उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 400/- रुपये प्राप्त हुये।

इस अवसर पर जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

# द्वितीय वार्षिकोत्सव की पत्रिका

# द्वितीय वार्षिकोत्सव की पत्रिका

# श्री तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

**नागपुर (राज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर का 22वाँ वार्षिकोत्सव व तत्त्वार्थसूत्र वर्ष का समापन संपन्न हुआ। इस अवसर पर दिनांक 9 से 15 जनवरी 2014 तक समारोह में तत्त्वार्थसूत्र मण्डल विधान का आयोजन श्रीमती मालतीदेवी विजयकुमारजी मोदी परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं समयसार के आधार से नैतिक सदाचार एवं लोक-व्यवहार की शिक्षा के साथ ही आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान की गंगा बहायी गई। साथ ही जिज्ञासु युवाओं के लिये विशेष चर्चासत्र का भी आयोजन किया गया। डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा विधान के बीच-बीच में सूत्रों के शुद्ध उच्चारण के साथ ही सामान्य अर्थ एवं मन्त्रों का वाचन किया।

विधि-विधान के कार्य ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर द्वारा कराये गये।

# षष्टम वार्षिक सम्मेलन संपन्न

**नागपुर (राज.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मण्डल ट्रस्ट नागपुर द्वारा संचालित श्री महावीर विद्या निकेतन ने अपनी स्थापनाका षष्टम वार्षिक सम्मेलन दिनांक 11 एवं 12 जनवरी 2014 को आयोजित किया।

इस अवसर पर एक संस्कार प्रदर्शनी आयोजित की गई, जिसमें विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा जैनधर्म का सांस्कृतिक इतिहास, ग्रीन सिम्बल के नाम पर भ्रान्ति का निवारण, पापाचार एवं सप्त व्यसन से होने वाली हानियों का दिग्दर्शन, भक्ष्याभक्ष्य विचार व ई कोडिंग की सही जानकारी, नरक दर्शन एवं तीन लोक की सजीव झांकी आदि का मॉडल व पोस्टरों के माध्यम से प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम में आचार्य पद्मनंदी द्वारा रचित पद्मनंदी पंचविंशतिका ग्रन्थ का विमोचन ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना व ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर के मंगल सानिध्य में हुआ।

इस अवसर पर विद्या निकेतन के आदर्श विद्यार्थी का चयन कर पुरस्कृत किया गया। साथ ही अन्य छात्रों को श्रेष्ठ कार्यों हेतु नकद पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त चतुर्थ सत्र के कक्षा 10वीं के छात्रों व प्रथम सत्र के कक्षा 12वीं के छात्रों का 'दीक्षान्त समारोह' ब्र. केशरीचंदजी 'धवल' छिन्दवाडा व ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के सानिध्य में संपन्न हुआ।

**पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-**
**वेबसाईट - www.vitragvani.com**
**संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई**
**Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com**

**श्री शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित -**

# जैन बालिका संस्कार संस्थान

**उदयपुर (राज.) :** यहाँ संचालित जैन बालिका संस्कार संस्थान के द्वितीय सत्र की प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। आप 15 मार्च तक आवेदन पत्र कार्यालय में जमा करा सकते हैं।

**विशेषतायें -** तत्त्वज्ञान के साथ श्रेष्ठ लौकिक शिक्षण संस्थान में अध्ययन करने का अवसर, देश की श्रेष्ठ बालिकाओं के साथ अध्ययन, धार्मिक/पारिवारिक, सामाजिक वातावरण में रहने का अवसर, सांस्कृतिक/साहित्यिक/खेलकूद आदि गतिविधियों द्वारा बालिका को अपनी प्रतिभा निखारने के भरपूर अवसर, संस्थान में धार्मिक शिक्षण के अतिरिक्त यथासंभव लौकिक विषयों के शिक्षण की व्यवस्था।

**प्रवेश प्रक्रिया -** कक्षा 9वीं में प्रवेश हेतु कक्षा 8वीं में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करनेवाली बालिका ही प्रवेश पात्रता शिविर के योग्य होगी। आवेदन पत्र के साथ कक्षा 7वीं की अंकसूची लगावें। दिनांक 7 से 9 अप्रैल तक उदयपुर में आयोजित प्रवेश पात्रता शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।

**संपर्क सूत्र -** डॉ. ममता जैन (निर्देशिका), जैन बालिका संस्कार संस्थान, विजया बैंक के ऊपर, 648, हिरणमगरी सेक्टर-13, उदयपुर (राज.) मोबा. 09928149886

# शोक समाचार

**कोटा (राज.) निवासी श्रीमती प्रेमलता जैन** धर्मपत्नी स्व. श्री अरिदमनलालजी जैन दिल्ली वाले का 92 वर्ष की आयु में दिनांक 27 जनवरी 2014 को अत्यंत शांतपरिणामों पूर्वक देहविलय हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं, आपने पाँच दशक तक बाबू युगलजी के प्रवचनों का भरपूर लाभ लिया और तत्त्वज्ञान को आत्मसात करने का निरंतर प्रयास किया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1100-1100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

**प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2014**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127